यौन संचारित संक्रमण एवं प्रजनन तंत्र संक्रमण

स्त्री या पुरुष के प्रजनन अंगों के संक्रमण को प्रजनन तंत्र संक्रमण (Reproductive Tract Infection) कहते हैं जो सूक्ष्म जीवाणुओं (बैक्टीरिया), विषाणुओं, परजीवी या फफूंद से होता है।

प्रजनन तंत्र संक्रमण के प्रमुख लक्षण –

- जननांग के आस पास लालिमा, खुजली या जलन
- पेशाब करते समय दर्द या जलन
- योनि या लिंग से बदरंग और बदबूदार स्त्राव
- जननांगों में दर्द अथवा सूजन और छाले
- महिलाओं में पेट के निचले भाग या पेडू में लम्बे समय तक दर्द

प्रजनन तंत्र संक्रमण के प्रमुख कारण व बचाव –

- शौच के बाद, सम्भोग के पहले या बाद तथा नहाते समय जनन अंगों की ठीक से सफाई न होने के कारण संक्रमित हो सकते हैं। इसीलिए जनन अंगों की साफ सफाई का विशेष महत्त्व है।
- माहवारी के समय साफ-सफाई (विशेष रूप से बाहरी प्रजनन अंगों की) न रखना व गंदे, गीले या धूप में न सूखे हुए कपड़े का उपयोग करने से संक्रमण फैलने का डर होता है। अतः माहवारी के दौरान लड़कियों/ महिलाओं को स्वच्छ, धुला हुआ और धूप में सूखा कपड़ा या सेनेटरी पैड का उपयोग करना चाहिए।
- गंदे अन्तः वस्त्रों के कारण भी संक्रमण फैलने का खतरा होता है अतः नित्य स्नान के बाद साफ़ सुथरे धुले हुए अन्तःवस्त्र पहनने चाहिए
- पति या पत्नी में से किसी को संक्रमण होने की स्थिति में दूसरे को भी संक्रमण की सम्भावना रहती है अतः दोनों का साथ में उपचार आवश्यक है।

यौन संचारित रोग (Sexually Transmitted Infection) वे रोग हैं जो यौन संपर्क के माध्यम से फैलते हैं। यह रोग विषाणु (वायरस), जीवाणु (बैक्टीरिया) या परजीवी के कारण होते हैं।

यौन संचारित रोग, जैसे कि क्लैमाइडिया, सूजाक (गोनोरेया), लैंगिक परिसर्प (जेनिटल हर्पीस), आतशक या उपदंश (सिफिलिस) आदि के भिन्न भिन्न लक्षण हैं जो कि मुख्तया प्रजनन तंत्र संक्रमण के लक्षणों जैसे ही हैं इसीलिए समय पर लक्षणों की पहचान कर उचित जांच करवाकर इलाज शुरू करना अत्यंत आवश्यक है।

प्रधानाचार्य ने आज सभी विद्यार्थियों के लिए डॉक्टर साहब से चर्चा का सत्र रखा है। विद्यार्थी, डॉक्टर से प्रश्न पूछकर अपनी शंकाओं का समाधान कर सकेंगे। डॉक्टर साहब आज हमें यौन रोगों के बारे में कुछ बताएंगे।

डॉक्टर साहब: बच्चों, प्रजनन अंगों में यदि निम्न लक्षण हो तो संक्रामक रोग की संभावनाएँ होती है। प्रजनन अंगों में दाने या ललाई, लिंग पर घाव अथवा मवाद गिरना, संभोग अथवा पेशाब के समय पीड़ा का अनुभव करना।

विद्यार्थी: डॉक्टर साहब, क्या ये लक्षण महिलाओं में भी हो सकते हैं ?

डॉक्टर साहब: यौन रोगों के महिलाओं में भी निम्न लक्षण दिखाई देते हैं। प्रजनन अंगों में फुंसियाँ या घाव, दुर्गंधयुक्त पानी का स्त्राव, पेशाब के समय पीड़ा या खुजली होना, बुखार आना जैसे लक्षण होते हैं।

विद्यार्थी: डॉक्टर साहब यदि इस प्रकार के लक्षण दिखाई दे तो हमें क्या करनी चाहिए?

डॉक्टर साहब: ऐसी स्थिति में हमें तत्काल डॉक्टर को दिखाना चाहिए, बिना किसी शंका व शर्म के अपनी बात बतानी चाहिए। यौन संचारित संक्रमणों का प्रारम्भिक तरीके में संयम, सुरक्षित यौन संबंध, साथी के प्रति वफादारी, असुरक्षित यौन संबंध से बचना, निरोध का उपयोग, जननांगों की साफ–सफाई एवं नीम हकीम से बचना चाहिए।

विद्यार्थी: डॉक्टर साहब, सुना है हमारे मोहल्ले में एक व्यक्ति को एड्स की बीमारी है, यह क्या है?

डॉक्टर साहब: एड्स, ह्यूमन इम्यूनो डेफिसिएंसी वायरस (HIV) से होने वाला एक रोग है। एच.आई.वी. संक्रमित स्त्री–पुरुष कई वर्षों तक सामान्य दिखाई देते है, ऐसी स्थिति में वे असुरक्षित यौन–संबंधों से दूसरों में रोग पैदा कर सकते हैं।

विद्यार्थी: डॉक्टर साहब, एड्स क्या है? यह कब होता है?

डॉक्टर साहब: एड्स एक रोग है जिसके कई लक्षण होते है। एच.आई.वी. संक्रमण की अन्तिम अवस्था है। जब एच.आई.वी. आपकी रोग प्रतिरोधकता प्रतिरक्षा प्रणाली को नष्ट कर देते है तब एड्स होता है। यह एक सिंड्रोम है अर्थात् कई संक्रमण एक साथ होते है जिससे शरीर कमजोर पड़ जाता है तथा रोगी की मृत्यु हो जाती है। एच.आई.वी. संक्रमण से 8–10 वर्ष बाद एड्स के लक्षण दिखाई देते है। बदनामी का डर, जानकारी नही होना, असुरक्षित यौन संबंध, इस बीमारी को फैलाने का मुख्य कारण है।